सम्पादकीय

साहेब सतनाम!

''चरैवेति चरैवति'' संस्कृत का यह वाक्यांश ऋग्वेद का हिस्सा है, जो हमें प्रेरणा देता है कि 'चलते रहो, चलते रहो' अर्थात् 'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो', बाधाओं के बावजूद रूको मत, निरंतर गतिमान रहो। अपनी स्थापना सन् 1972 ई. से पग-पग आगे बढ़ता अपना 'श्री महंथ रामाश्रयदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा, गाजीपुर (उ.प्र.), अनेक गरिमापूर्ण पगडंडियों से होता हुआ सुनहले मार्गों और मंजिलों तक की यात्रा पूर्ण कर चुका है, और निरंतर प्रगतिशील बना हुआ है। पचास से अधिक वर्षों की यह यात्रा अपने आप में एक महोत्सव जैसा है। समूचे भारत में अपनी तरह का अनूठा आध्यात्मिक केन्द्र जहाँ दशाधिक संतो के तपसपूर्ण जीवन से उर्वर और उनके शुभ आशीष से उपजाया हुआ 'महाविद्यालय' आज फल-फूल रहा है। इस परिसर और पूरे परिक्षेत्र में प्रकाशप्राप्त महान संतों (बूला साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब समेत सभी संत जनों) की अमर-वाणियाँ गूँजती रहती हैं। उन्हीं वाणियों की प्रतिध्वनि बन शैक्षणिक स्वरूप में 'अपराजिता' महाविद्यालय की पारंपरिक पत्रिका का यह 'स्वर्ण जयंती विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है।

इसमें गुरुओं का आशीर्वचन है, विद्वान आचार्यों का चिंतन और संस्था से सम्बद्ध छात्र-छात्राओं की कच्ची-पकी अभिव्यक्तियाँ भी हैं। 'अपराजिता' सबको स्वर रूप प्रदान कर रही है। आरम्भ से ही श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा की महत्ता में श्रीवृद्धि के लिए 'अपराजिता' पत्रिका की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। कई कारणों से इसका प्रकाशन पिछले दस वर्षों से बाधित था। अपनी पुरानी मेधा और शक्ति का संचयन कर नये कलेवर में 'अपराजिता' आप सबके सामने प्रस्तुत है। इस बीच समय के साथ बहुत कुछ बदला। पुराने पत्ते झड़े, नये पल्लव विकसित हुए। वृक्ष वहीं खड़ा समय को साधता चल रहा है। प्रकृति भी परिवर्तन के वशीभूत है। सुमित्रानन्दन पंत की पंक्तियाँ है- 'पुरातनता का यह निर्मोक सहन करती न प्रकृति पल एक'। पुरातनता यदि निर्मोक है तो परंपरा 'बीज'। मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि इस महाविद्यालय का बीज उन्नत किस्म का है, जिसमें गुणात्मक 'स्वाद' है तो मात्रात्मक 'संख्या' भी कम नहीं है।

यह हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय जिनका नाम पाकर धन्य हुआ ऐसे सिद्धपीठ भुड़कुड़ा के दसवें महंथ (ब्रह्मलीन) श्री रामाश्रयदास जी महाराज की भव्य प्रतिमा 'स्वर्ण जयन्ती वर्ष' के आनन्द उत्सव के बीच परिसर में स्थापित हुई है। उनकी मूर्तिमान सत्ता को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

सिद्धपीठ भुड़कुड़ा के वर्तमान पीठाधीश्वर एवं श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा के अध्यक्ष/प्रबंधक श्री महंथ शत्रुध्नदास जी महाराज की पत्रिका को प्राप्त शुभाशीषों एवं आशीर्वचनों के लिए सादर प्रणाम करता हूँ। साथ ही, अपराजिता के स्वप्न दृष्टा सं. प्राचार्य (डॉ. इन्द्रदेव सिंह जी) एवं महाविद्यालय के पूर्व प्रबन्धक दिवंगत आदरणीय प्रो. उदय प्रताप सिंह जी की स्मृति को भी आदरपूर्वक नमन करता हूँ।

वर्षों की अनेक विघ्न-बाधाओं को क्रमशः दूर करते हुए महाविद्यालय की पुरानी रंगत लौटाते, सदैव सकारात्मक विकासमार्गी, जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से 'अपराजिता' का यह विशेषांक आप सबके सामने अपराजेय उपस्थित है, उन प्राचार्य प्रो. (CMA) बृजेश कुमार जायसवाल जी का हार्दिक अभिनन्दन है। उनके प्रति पत्रिका का संपादक मण्डल अपना धन्यवाद ज्ञापित करता है।

'अपराजिता' के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री जी समेत अनेक गणमान्य विभूतियों, माननीय विद्वानों का शुभकामना सन्देश प्राप्त हुआ है। महाविद्यालय की ओर से उन सभी आदरणीय व्यक्तित्वों और माननीय विद्वतजनों को महाविद्यालय का पत्रिका परिवार अपनी विशेष कृतज्ञता व्यक्त करता है। पत्रिका में प्रकाशन के लिए हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपने आलेख, रचनाएँ आदि भेजने वाले सभी शिक्षक-साथियों और गैर-शिक्षण कर्मचारी बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद। 'अपराजिता' जिनके लिए सबसे अधिक उपयोगी है, उन विद्यार्थियों का विशेष आभार जिन्होंने अपनी-अपनी मौलिक सृजनात्मकता हमें सौंपकर 'पत्रिका' में चार-चाँद लगा दिए। अंत में प्रकाशन का समस्त तकनीकी कार्यभार जिस त्वरा व सधे हाथों से सम्पन्न किया गया, उस प्रकाशन संस्था 'डी.जी. प्रिंटर्स, राजकुमार जायसवाल' के प्रति आभार प्रदर्शन सम्पादक मण्डल का नैतिक दायित्व है। सम्पादक मण्डल के अतिरिक्त 'पत्रिका' अपराजिता के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले समस्त महाविद्यालय परिवार व उससे सम्बन्धित हर एक व्यक्ति का यथायोग्य आभार व्यक्त करता हूँ। अंत में ज्ञान, प्रेम और आध्यात्मिकता की इस तपस्थली से सबको प्रेम पूर्ण नमस्कार।

''यारी वारी प्रेम की, गाछी बूला दास,
जन गुलाल साखा भयो, आदि शब्द प्रकाश।''

प्रोफेसर प्रकाश चन्द्र पटेल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग